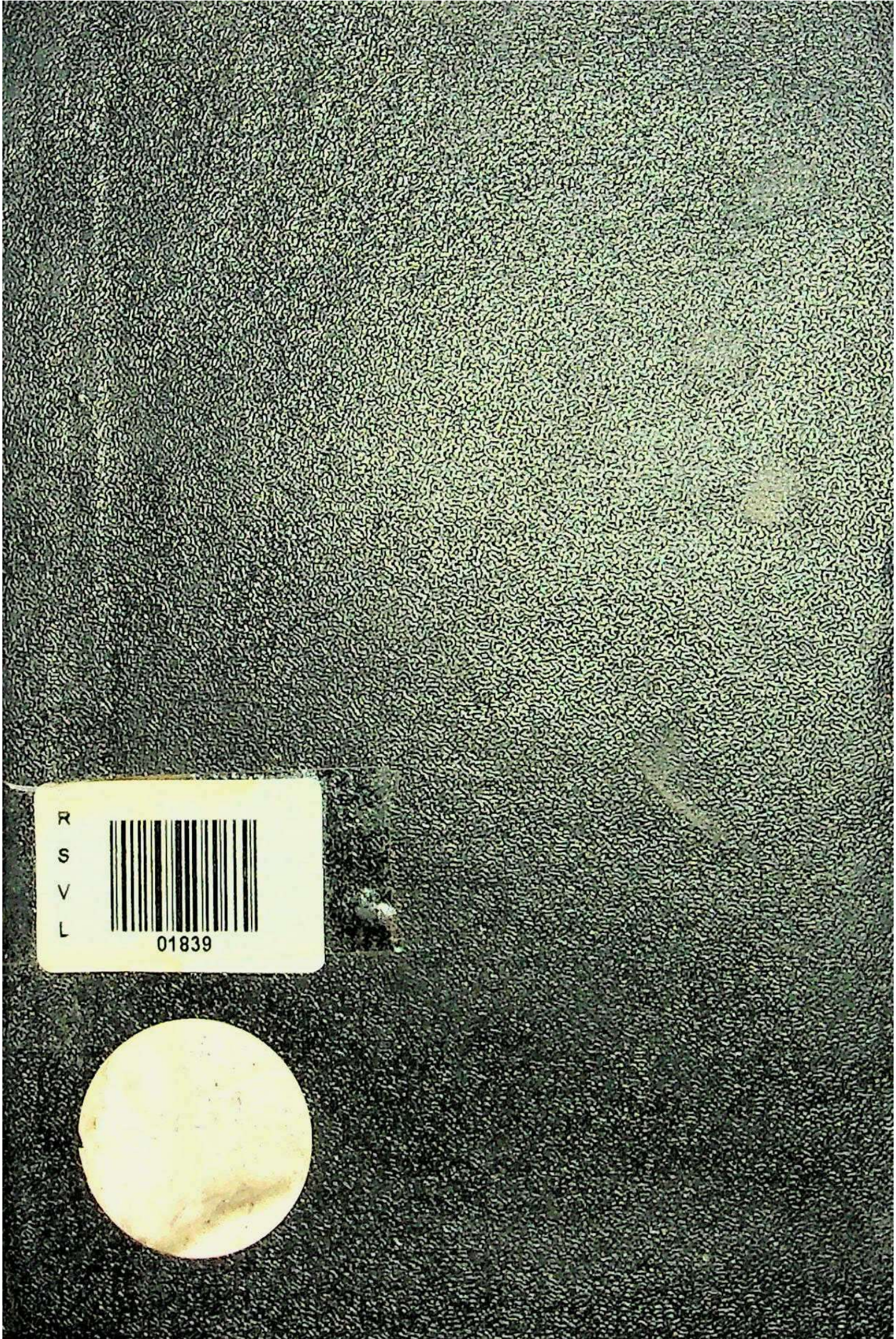

R
S
V
L
01839

1839

THE

HARIDAS SANSKRIT SERIES

84

RATNA GARBHĀ CHAKRAM

OF

Daivajñabhus'ana

PANDIT S'RĪ MĀTRĪ PRASĀDA PĀNDEYA

EDITED WITH AUTHOR'S OWN

HARIPRIYĀ HINDI COMMENTARY & EXAMPLES.

॥ श्रीः ॥

रत्नगर्भाचक्रम्

दैवज्ञभूषण पण्डित श्री मातृप्रसादपाण्डेय प्रणीतम् ।

तेनैव विरचितं हरिप्रियानाम्नि भाषाटीकोदाहरणसम्वलितम् ।

PUBLISHED BY

JAYA KRISHNA DÂS HARIDÂS GUPTA

The Chowkhamba Sanskrit Series Office.

BENARES.

1939

All Rights Reserved by the Publishers.

KENDRIYA SANSKRIT VIDYA PEETH
TIRUPATI.
LIBRARY.
1899

भूमिका--

अतसी कुसुमोपमेय कान्तिर्यमुनाकूल कदम्ब मूलवर्ती ।
नवगोपबधू विलास शाली वनमाली वितनोतु मङ्गलानि ॥१॥

गर्गसंहिता

दवज्ञवृन्द !

वेद के अङ्गों में ज्योतिषशास्त्र नेत्राङ्ग है, अतएव यह नेत्र के भाँति मानवसम्प्रदायके प्रत्येक कर्मों का संशोधन भली भाँति किया करता है। गर्भाधान से लेकर सम्पूर्ण संस्कार इसके ही दृष्टि से शुद्ध होते हैं। किंबहुना जगत के सारे कर्मों में इस शास्त्र की ही महता महान् है। धनोद्धार भी इस शास्त्र में विद्यमान है, धन के पास में रहने ही से राजा महाराजा सेठ साहूकार मंजूरीदार जिमी-दार आदि हैं, उनमें सद् विचारवान् धनद्वारा यज्ञ,तीर्थ, दान, अ. द करते हैं, और भांति २ के महलों को निर्माण कर उसमें निवासकर मोटर आदिपर दौड़ा करते हैं, धनके बिना मनुष्यादि का भरण पोषण होने में असाध्य है।

जो धनरत्न गर्भा में अदृष्ट अश्रुत है उन के उद्धारार्थ महेशादि द्वारा अहिवल चक्र आदि संपादित किये गये हैं, उसके सरलरीतिसे जानने के निमित्त रत्नगर्भाचक्र को दैवज्ञभूषण पण्डित मातृप्रसाद पाण्डेयजी ने बनाया है और जनोपकारार्थ उसको हरिक्रिया नाम्नी-सोदाहण भाषा टाका से विभूषित किया है। आशा है कि विद्वान लोग इस अभिनव पुस्तक का सम्मान कर रत्नों का लाभ उठावेंगे।

निवेदक—
विश्वकान्तपाण्डेय
साहित्यशास्त्री
नव्वाबगञ्ज-काशी

गोपाष्टमी
सम्वत् १९९५

श्रीगणेशायनमः ।

रत्नगर्भाचक्रम् ।

हरिप्रियानाम्निभाषाटीकयासम्भूषितम् ।

मङ्गलाचरणम्

उमार्चितं चारु चन्द्राभिरामं,
भुजङ्गेन्द्रसम्भूषितं विश्वनाथम् ।
प्रणम्याहमीशं शिवं रत्नगर्भो,
प्रवक्ष्ये महीदेवमातृप्रसादः ॥ १ ॥

श्री पार्वती जी से सम्पूजित रमणीय चन्द्रमा से लसित सर्पराज (शेष) जी से चारो तरफ से विभूषित समस्त संसार के स्वामी विश्वनाथ जी को मैं मातृप्रसाद पाण्डेय प्रणाम करके रत्नगर्भाचक्र को कहता हूँ ॥ १ ॥

धरायां स्थितं द्रव्य शल्ये च तोयं
तथादैवमन्यादि ज्ञानं कथं स्यात् ।
श्रुतं नैव दृष्टं कदाचिद् हि येषां
कथं लभ्यते कोशमन्यं धरिव्याम् ॥ २ ॥

भूमि में स्थित द्रव्य हड्डी जल देवता तथा अन्य कोयला

भूमी आदि का ज्ञान कैसे होगा ? जो कभी न नेत्र से देखा न कभी कान से सुना उस धन का वा अन्य वस्तु का लाभ कैसे होगा ॥ २ ॥

बृहद्भानु भूम्यूर्ध्वरेखां लिखेद् वै,
लिखेच्चैव तीर्यक् त्रियच्चन्द्ररेखाम् ।
शतान्यष्ट संख्यानि दैवज्ञवृन्दाः
सु कोष्ठानि यातानि चक्रेऽथ लेख्यम् ॥३॥

अधोऽधो नवाङ्कं क्रमेणैव घस्रे,
वृषादादितो वृश्चिकाद्यस्तुरात्रौ ।
अथेशादिकोणादितः सूर्य्य बिम्बो-
दितश्चैव यामद्वयं वह्निकोणात् ॥ ४ ॥

ततो याम युग्मं हि नैऋत्यकोणात्,
तथा वायु कोणाद्धियामद्वयं च ।
प्रकारेण ह्येवं तु संस्थाप्यचक्रे
न्यसेत्खेटकान् भास्करादीन् क्रमेण ॥ ५ ॥

हे विप्रगण! १३ रेखा खडी और १० रेखा बेडी खींचने से १०८ कोष्ठ का चक्र बनता है। यदि दिन का इष्टकाल हो तो वृषादि से और रात्रि का इष्टकाल हो तो वृश्चिक राशि से प्रारम्भ करके प्रत्येक राशि के नव २ अंश के अङ्क को लिखे। सूर्य के उदय से दो पहर पर्यन्त ईशान कोण से फिर उसके बाद दो पहर तक अग्नि कोण से फिर दो पहर तक नैऋत्य कोण से फिर दोपहर तक वायव्य कोण से प्रारम्भ

करके बारहो राशि के नवांश लिखकर अपने अपने नवांश में सूर्यादि ग्रहों को क्रम से स्थापित करे ॥ ३-४-५ ॥

दिनेशोदयादिष्टनाड्योद्विनिघ्ना,
शरैर्भाजिताः स्पष्ट सूर्य्यान्विताश्चेत् ।
स्फुटं लग्नकं कोशसंसाधनार्थं,
बुधाः ! सार्धयुग्माघटीमानमर्कात् ॥ ६ ॥
भवेल्लग्नमत्रैव होरा यथा स्यात् ,
चरे तन्नवांशः स्थिरेत्तुरत्नात् ।
द्विभे पुत्रभावाद् विचारं प्रकुर्य्याद् ,
भवेन्मेरु सज्ज्ञः धरापूज्यवृन्दाः ॥ ७ ॥

प्रश्न के समय सूर्योदय से जितनी इष्ट*घटी बीती हो उस को दो से गुणाकरे फिर उसमें ५ का भाग देने से लब्ध राशि आदि होती है, लब्ध राश्यादि को सूर्य के राशि आदि में जोडने से धन आदि साधन के लिये स्पष्ट लग्न होता है । यहां सूर्य के उदय से ढाई २ दण्ड एक २ लग्न का प्रमाण है । होरा लग्न के सदृशमाना गया है । इस प्रकार

---

* इष्ट के दण्ड के दूनाकरके ५ का भाग दे लब्ध राशि शेष को ३० से गुणा कर पल के जोड़कर ५ का भाग देने से अंश, शेष को ६० से गुणाकर विपल के जोड़कर ५ का भाग देने से लब्ध कला होता है । वा इष्ट घटी पल सभी को दुना कर द्विगुणित इष्ट में ५ का भाग ले शेष को ६० से गुणा कर द्विगुणित पल को जोड़ कर १० का भाग देने से लब्ध अंश होता है अथवा ५ पल का अंश होता है इसा प्रकार से बनाले अथवा इष्ट के पलीकृत कर १५० का भाग दे के राश्यादि निकाल ले ।

लग्न चर हो तो उसी का नवांश, स्थिर हो तो लग्न से नवमीं राशि का और द्विस्वभाव हो तो उससे पांचवीं राशि का लग्न नवांश तुल्य जो नवांश हो उसकी मेरु सञ्ज्ञा है ॥६॥७॥

उदाहरण—

श्रीसम्वत् १९८२ शाका १८४७ वैशाख सुदी ७ गुरुवारके सूर्योदय से घटी १० पल ८ पर श्रीमान् तेगबहादुर सिंहजी आनरेरी मजिष्ट्रेट कछवा मिरजापुर ने प्रश्न किया ।

उसदिन स्पष्टग्रह—

ग्रह	रा.	अं.	क.	वि.
सू.	०	१२	५५	५६
चं.	३	१	५	१२
मं.	१०	१६	६	१६
बु.	०	८	३२	१३
वृ.	०	३	३	५४
शु.	११	२८	२२	२५
श.	७	१६	५१	८
रा.	१	२२	२०	१३
के.	७	२२	२०	१३

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	रा.	के.	नवांश संख्या
सूर्य ८ वें नवांश में	चन्द्र पहले नवांश में	मङ्गल ६ नवांश में	बुध ७ वें नवांश में	गुरु पहले नवांश में	शुक्र नवम नवांश में	शनि छठें नवांश में	राहु ७ वें नवांश में	केतु ७ वें नवांश में	

इष्ट घटी १० पल ८ को २ से गुणाकिया तो २०। १६ हुआ द्विगुणित घटी २० में ५ का भागदिया तो लब्धराशि ४ मिली, द्विगुणित पल १६ में *दश का भाग देने से लब्धि

* छिन्नेष्टनाड्यः पञ्चाप्ताः भ शषं च पलीकृतम् ।
दशाप्तमंशास्ते युक्तारवे होरादयो भवेत् ॥ १ ॥

अंश १ मिला शेष को ६० से गुणातो ३६० हुआ इसमें १० का भाग देने से लब्ध कला ३६ मिली, इस प्रकार राश्यादि-लब्ध ४।१।३६ हुआ इसको तात्कालिकसूर्य ०।१२।५५।५९ में युक्त करने से द्रव्य ज्ञानार्थ स्पष्ट लग्न ४।१४।३१।५९ हुआ। उस दिन दिनार्ध १६।५ है इससे इष्ट काल १०।८ कम है अतः मध्याह्न के पूर्व का इष्ट काल होना निश्चय है।

इसलिये जो "बृहद्भानु०" श्लो० ३-४-५ के अनुसार चक्र का निर्माण करके उसमें वृषादि द्वादश राशिके ईशान कोण से अग्निकोणपर्यन्त लिखे।

स्पष्ट लग्न सिंह है इसमें पांचवाँ नवांश है वहभी सिंह का स्थिर संज्ञक है इसलिये श्लो० ७ के अनुसार सिंहसे नवम मेषके पञ्चम नवांश में मेरु का स्थान हुआ।

यदंशे च मेरुः स्थितो वै तदादे,
रवेरंशका वाविला वृत्तकाख्यम् ।
सुभद्राश्वकाख्यं तदग्रेभगांशं ,
तदग्रे हरेर्वर्षकं द्वादशांशाः ॥ ८ ॥
ततः किन्नराख्यं द्विनेशांशका वै
रवेरंशका भारताख्यं हि ज्ञेयम् ।
ततः केतुमाल्याभिधं द्वादशांशाः
ततोरम्यकाख्यं हिरण्याख्य कं तु ॥ ९ ॥
कुरोर्वर्षकं वैतले द्वादशांशाः
विधोर्वर्ष हर्यादि कानि च त्रीणि ।

रवेर्वर्षरम्यादिकानि च त्रीणि
द्वयोस्तच्च शेषाणि वर्षाणि विप्राः ॥ १० ॥

ऊपर के कहे हुए के अनुसार जिस अंशमें मेरु हो निश्चय वहां से चक्रमें १२ अंश तक 'इलावृत्त' नामक वर्ष, उसके आगे १२ अंश पर्यन्त 'भद्राश्ववर्ष' उसके आगे १२ अंश तक 'हरिवर्ष' उसके आगे १२ अंश पर्यन्त 'किन्नर वर्ष' उसके आगे १२ अंश 'भारतवर्ष' उसके आगे १२ अंश केतुमाल वर्ष, उसके बाद १२ अंश रम्यकवर्ष, उसके आगे १२ अंश हिरण्मयवर्ष' फिर उसके आगे हे विप्रगण १२ अंश पर्यन्त कुरु जाने । इस प्रकार से द्वादश राशिके नवांश चक्र में जम्बूदीप के ९ खण्डों (वर्षों) का न्यास करे । ९ वर्षों में से हरिवर्ष, किन्नरवर्ष, भारतवर्ष ये तीन चन्द्रमा के, और रम्यक वर्ष, हिरण्य वर्ष, कुरुवर्ष, ये तीन सूर्य के और शेष इलावृत्त, भद्राश्व केतुमाल ये तीन वर्ष सूर्य चन्द्रमा दोनों के हैं अतः ये मिश्र वर्ष कहे जाते हैं ।८।९।१०।

वर्षाधिप चक्रम्

संख्या	चन्द्रवर्ष	सूर्यवर्ष	मिश्रवर्ष
१	हरि	रम्यक	भद्राश्व
२	किन्नर	हिरण्य	इलावृत्त
३	भारत	कुरु	केतुमाल

ईशान

पूर्व

अग्नि

	वृ.	मि.	क.	सिं	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	मे.
अ० १	इला	भद्राश्व	भद्राश्व चं.	हरि	किन्नर	भारत	भारत	केतुमा	रम्यक	हिरण्य	हिरण्य	कुरु वृ.
२	इला	भद्राश्व	हरि	हरि	किन्नर	भारत	केतुमा	केतुमा	रम्यक	हिरण्य	कुरु	कुरु
३	इला	भद्राश्व	हरि	हरि	किन्नर	भारत	केतुमा	केतुमा	रम्यक	हिरण्य	कुरु	कुरु बु.
४	इला	भद्राश्व	हरि	हरि	किन्नर	भारत	केतुमा	केतुमा	रम्यक	हिरण्य	कुरु	कुरु सूर्य
उत्तर ५	इला	भद्राश्व	हरि	किन्नर	किन्नर	भारत	केतुमा	रम्यक	रम्यक	हिरण्य	कुरु	इला मेरु
६	इला	भद्राश्व	हरि	किन्नर	किन्नर	भारत	केतुमा श०	रम्यक	रम्यक	हिरण्य मं.	कुरु	इला
७	इला रा.	भद्राश्व	हरि	किन्नर	किन्नर	भारत	केतुमा के०	रम्यक	रम्यक	हिरण्य	कुरु	इला
८	भद्राश्व	भद्राश्व	हरि	किन्नर	भारत	भारत	केतुमा	रम्यक	हिरण्य	हिरण्य	कुरु	इला
९	भद्राश्व	भद्राश्व	हरि	किन्नर	भारत	भारत	केतुमा	रम्यक	हिरण्य	हिरण्य	कुरु शु.	इला

दक्षिण

वायव्य

पश्चिम

नैऋत्य

चक्र में ग्रहों को स्थापित करने पर ज्ञात हुआ कि सूर्य कुरु वर्ष में चन्द्रमा भद्राश्व वर्ष में स्थित हैं श्लो. १० के अनुसार कुरु सूर्य का वर्ष है और भद्राश्व मिश्र वर्ष है । सूर्य अपने वर्ष में हैं चन्द्रमा मिश्र वर्ष में हैं ।

दिवानायकादिर्यदंशे स्थितश्चेत् ,
तदाधीन वक्ष्ये फलं सद् किलासद् ।
यदा सूर्य चन्द्रौ निशाधीशवर्षे
ध्रुवं तत्र कोष्ठे निधिर्भूसुरेन्द्राः ॥ ११ ॥
दिनेशस्य वर्षे रवीन्दूस्थितौ चेत् ,
तदा तत्र शल्यं वदेत् विज्ञवर्य्याः ।
यदामिश्र वर्षे स्थितौ भास्करेन्दू ,
तदा देवता निश्चितं तत्र भूमौ ॥ १२ ॥
यदा चन्द्रवर्षे दिनेशश्च सोमः,
स्थितः सूर्य वर्षे तदा नास्ति किञ्चित् ।
यदा तौ स्थितौ स्वस्यवर्षे तदा वै
धरायां सशल्यो निधिस्तत्रज्ञेयः ॥ १३ ॥

सूर्यादिग्रह जिसके अंश में स्थित हो उसके अनुसार शुभाशुभ फल कहे । हे भूसुरेन्द्रों ! चन्द्रमा के वर्ष में सूर्य चन्द्रमा स्थित हो तो उस कोष्ठक में निश्चय धन जाने, हे विज्ञवरों ! यदि सूर्य के वर्ष में सूर्य चन्द्रमास्थित हो तो वहां शल्य कहे । यदि मिश्रवर्ष में सूर्य चन्द्रमा दोनों हो तो उस भूमि में देवता जाने, यदि चन्द्र वर्ष में सूर्य, सूर्य वर्ष में चन्द्रमा हो

1839

तो वहां कुछ नहीं है यह जाने, यदि वे सूर्य चन्द्रमा अपने २ वर्ष में स्थित हो तो भूमि में शल्य के सहित द्रव्य जाने अर्थात् द्रव्य शल्य दोनों जाने ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

वर्ष	चन्द्र	सूर्य	मिश्र	चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	सूर्य
स्थित	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र	सूर्य	चन्द्र	चन्द्र	सूर्य
फल	द्रव्य १	शल्य २	देवता ३	कुछ नहीं ४		द्रव्य शल्य ५	

यदा चन्द्रमा मिश्रवर्षे हि सूर्यः,
स्थितः सूर्य वर्षे तदा देव शल्ये।
दिनेशाधिश्वरो मिश्र वर्षे च सूर्यः,
शशाङ्कस्यवर्षे तदा देव द्रव्ये ॥ १४
रविर्मिश्रवर्षे शशीसूर्य वर्षे,
स्थितो भूमिमध्येऽमरश्चैव शल्यम्।
भगो मिश्र वर्षे विधुश्चन्द्रवर्षे
यदा संस्थितो देवद्रव्ये धरायाम् ॥ १५ ॥

चन्द्रमा मिश्रवर्ष में सूर्य सूर्य वर्ष में हो तो देवता और शल्य जाने। चन्द्रमा मिश्र वर्ष में हो सूर्य चन्द्रवर्ष में हो तो देवता और द्रव्य जाने। सूर्य मिश्रवर्ष में हो चन्द्रमा सूर्य वर्षमें हो तो भी जमीन पर देवता शल्य जाने। सूर्य मिश्रवर्ष में हो चन्द्रमा चन्द्र वर्ष में हो तो भी देवता और द्रव्यभूमि में जाने॥ १४।१५॥

इसमें उदाहरण दिया गया है उसके अनुसार चन्द्रमा के,

Δ 2:864

मिश्र वर्ष में और सूर्य के अपने वर्ष में होने से देवता और शल्य दोनो है यह निश्चय हुआ ।

द्रव्य लाभालाभयोगः-

दिनेशः स्ववर्गे स्थितोरात्रिनाथः,
स्वमित्रस्य वर्गे यदा संस्थितश्चेत् ।
तदाभिन्नभाण्डं वदेत् तत्र भूमौ
तुषं चैव केशादिकं संयुतं हि ॥ १६ ॥

सूर्य स्ववर्ग (सिंह के राशि वा नवांश) में हो चन्द्रमा अपने मित्र के राशि वा नवांश में हो तो फुटे हुए पात्र में बुसा बूसी बाल कोइला आदि कहे ॥ १६ ॥

यदा रात्रिनाथो दिनेशस्य वर्गे
स्थितो पद्मिनी नायको मित्रवर्गे ।
तदा तत्र नाना विधं द्रव्यदृष्टं
न लाभो भवेच्चैव तेषां कदाचित् ॥ १७ ॥

यदि चन्द्रमा सूर्य के वर्ग (राशि नवांश) में हो और सूर्य अपने मित्र के वर्ग में हो तो बहुत प्रकार का द्रव्य देख पड़ने पर भी कभी लाभ नहीं होगा ॥ १७ ॥

यदा भास्करश्चन्द्र वर्गे स्थितश्चेत्
स्थितौ ग्लौर्यदा मित्र वर्गे हि विद्वन् ।
अलभ्यं तदा तत्र द्रव्यं सदैव
युतं रक्षभूतादिभिः सर्वदैव ॥ १८ ॥

हे विद्वन् ! यदि चन्द्रमा के वर्ग (नवांश) में सूर्य हो और मित्र के नवांश में चन्द्रमा हो तो वह सदा राक्षस भूतादि से युक्त सर्वदा अलभ्य जाने अर्थात् न मिलेगा ॥ १८ ॥

मृगाङ्कः स्ववर्गे सुहृद्वर्गगोऽर्कः
निधिः संस्थितो दृश्यते नैव तत्र ।
उपायेन लभ्यं धनं भूमि देवाः
उपायं विना नास्ति लाभं कदापि ॥ १९ ॥

चन्द्रमा अपने वर्ग (वृष के नवांश) में और मित्र के वर्ग म सूर्य हो तो वहां द्रव्य है देख नहीं पड़ता है, उपाय से वह मिलेगा विना उपाय कभी भी न मिलेगा ॥ १९ ॥

विनिश्चित्य ह्येवं विचारं प्रकुर्यात्
धनं कुत्र कोष्ठे त्वहं सम्प्रवक्ष्ये ।
हिमांशुः स्थितः यत्र चक्रे च तत्र
नयेत् प्रज्ञया चैव मेरुं विधिज्ञाः ॥ २० ॥

इस प्रकार विचार को करे, धन किस कोष्ठ में है इसको मैं कहताहूं । चन्द्रमा अपने वर्ग में हैं सूर्य सम वर्ग में हैं इससे यहां भी उपाय से लाभ कहे ॥ २० ॥

यदंशे स्थितः चन्द्रमा चैव मेरोः
ग्रहाः स्वस्वभावात् प्रगच्छन्ति तावत् ।
शशी यत्र चक्रे तु सञ्चालितश्चेत्
प्रकारेण त्वेवं निधिस्तत्रसत्यम् ॥ २१ ॥
जलं दैत्य पूज्येन शल्यं भगेन
वदेद् देवता देवपूज्येन तत्र ।

पूर्वोक्त चक्र में जहां—

चन्द्रमा है वहां अपनी बुद्धि से चक्र को चालित कर मेरु की कल्पना करे अर्थात् मेरु से चन्द्रमा जितने नवांश आगे रहै सब ग्रह उतने उतने अंश पर आगे चले जाते हैं । इस

प्रकार से चक्र चालित करने पर चन्द्रमा जिस कोष्ठ में हो उसी कोष्ठ में द्रव्य जाने, शुक्र जहां हो वहां जल, सूर्य जहां हो वहां शस्य और जहां बृहस्पति हो वहां देवता जाने ॥ २१ ॥

मेरुसे चन्द्रमा २४ अंशपर है अतः मेरुको चन्द्रस्थान में चालितकर (धरे) और सर्वग्रह अपने २ स्थान से २४ अंश-पर चले जायगें चन्द्रमा अपने स्थान (कर्क के पहले अंश) से चलित होकर कन्या के छठे अंश में जा पहुँचा इसलिये इस चक्र के अनुसार हो गये ।

राशि	वृष	मि.	कर्क	सिं	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी	मे.
अंश १	१	१	१ मेरु	१	१	१	१	१	१	१	१	१
२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२ शु.	२	२
३	३	३	३	३ गु.	३	३	३	३	३	३ के.	३	३
४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
५	५	५ शु.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
६	६	६ बु.	६	६	६ चं.	६	६	६	६	६	६	६ मं.
७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
८	८	८ बु.	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८
९	९	९ सू.	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९

सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	ग्रह
चं.मं. वृ.	सू. बु.	सू.चं. वृ.	सू. शु.	सू.चं. मं.	बु. श.	शु. बु.	मित्र
बु.	मं. वृ. शु. श.	शु. श.	मं. वृ, श.	श.	मं. वृ.	वृ.	सम
शु. श.	०	बु.	चं.	बु. शु.	सू. चं.	सू.चं. मं.	शत्रु
सिंह	कर्क	मे. वृश्चि	मि. कन्या	ध. मी.	वृष तुला	कुंभ. मकर	राशि

चर	स्थिर	द्विस्वभाव
मे. कर्क तुला म.	वृष. सिं. वृश्चि. कुं.	मि. कन्या ध. मी

चला चल द्रव्य विचारः

स्थिरो वै स्थिरांशे चरे चञ्चलं च
तथा द्विस्वभावांशगे पूर्वगेऽपि ॥ २२ ॥
स्थिरश्चोत्तरार्धे चलं सर्व दैव
धिया कल्पयेद् भूमि मानं गतांशात् ।

यदि चन्द्रादि ग्रह स्थिर राशि (२।५।८।११) के नवांश में हो तो द्रव्य आदि जहां धरा है वहां स्थिर है। चरराशि (१।४।७।१०) के नवांश में हो तो पूर्व स्थान से चलित हो गया

है, और जो द्विस्वभावराशि (३।६।९।१२) के नवांश में हो तो नवांश के पूर्वार्ध में स्थिर उत्तरार्ध में चलित जाने ॥२२॥

भूमिमध्ये द्रव्य हस्त परिमाणः—

स्थिरांशे द्विनिघ्नं द्विभे वै त्रिगुण्यं
चरांशे हिमांशुर्हि मेरौ स्थितश्च ॥ २३ ॥
धनं तोयराशौ स्थितं चैव वाच्यं
धरा देव वृन्दा धरण्यां हि द्रव्यम् ।

द्रव्य कितने नीचे है इसको बुद्धि के अनुसार ग्रह के गत नवांश प्रमाण के अनुसार जाने चर में हो तो गत नवांश के समान स्थिर में हो तो द्विगुणित द्विस्वभाव में हो तो त्रिगुणित नवांश सदृश हस्त आदि में जाने । चरांश में चन्द्रमा और मेरु दोनों हो तो धन जल (भूमि भाग में जल के मध्य) में है हे धरा-देव वृन्द ऐसा जानो ॥२३॥

द्रव्य पात्र निर्णयः—

अजाद्यंशगे रात्रिनाथे यदाचेत्
वदेद् द्रव्यभाण्डं क्रमेणैव विप्राः ॥ २४ ॥
वरिष्टं दृषद् धातुपात्रं मृदाख्यं
तथा लौह पात्रं हिरण्यस्य पात्रम् ।
शिलापात्रके ताम्रके रीतिपात्रे
वदेल्लौह पात्रे मृदायां च कुण्डौ ॥ २५ ॥
धरा पूज्य ज्योतिर्विदा विप्र वृन्दाः
प्रकारेण ह्येवं सदा चैव चिन्त्यम् ।

चन्द्रमा के मेषादि नवांशा से द्रव्य पात्र को इस प्रकार से जाने कि मेष में चन्द्रमा हो तो ताम्र पात्र, वृषांश में पत्थल का पात्र, मिथुनांश में धातु का पात्र, कर्कांश में मिट्टी का पात्र, सिहांश में लोह का पात्र, कन्यांश में सोने का पात्र, तुलांश में पत्थल के पात्र में वृश्चिकांश में ताम्र का, धन के अंश में पीतल का, मकरांश में लोहे का कुम्भांश में मिट्टी का, और मीन के अंश में कुण्ड द्रव्य का पात्र जाने ॥ २४-२५ ॥

मैंने जो उदाहरण दिया है इसमें चन्द्रमा कर्क के नवांश में है इस से मिट्टी के पात्र में निधि होना चाहिये ॥२४-२५॥

शशाङ्के यदोत्युच्चगे जायते चेत्
तदा द्रव्य भाण्डं वदेदूर्ध्वगं तम् ॥ २६ ॥
यदा चन्द्रमा चान्य खेटे न युक्तः
तदाधिष्ठितं द्रव्यकं चैव ज्ञेयम् ।
यदा चन्द्रमा भानुना संयुतश्चेत्
तदा यक्षवर्गेण संरक्षितं च ॥ २७ ॥
युतो भूमिपुत्रेण द्रव्यस्य भाण्डं
तदा वायु पुत्रेण संरक्षितं हि ।
पिशाचेन संरक्षितं द्रव्य सर्वं
यदा वै स्व पुत्रेण सार्धं हिमांशुः ॥ २८ ॥
कुबेरेण द्रव्यं सुसंरक्षितं हि
यदा देव पूज्येन युक्तो शशाङ्कः ।
हिमांशुर्यदा दैत्य पूज्येन युक्तः
तदा रक्षितं प्रेत भूतादिकेन ॥ २९ ॥

यदा पद्मिनी नाथ पुत्रेण युक्तः
शशी म्लेच्छ वीर्येण कोशं हि रक्ष्यम् ।
यदा सिंहिका सूनुना संयुतो ग्लौः
तदा रक्षितं स्वं हि सर्पादिकेन ॥ ३० ॥

यदि चन्द्रमा अपने परमोच्च (वृषराशिके ३ अंश तक) में हो तो भूमि से ऊपर जञ्जीर वा अन्य किसी से बधा हुआ द्रव्य जाने । यदि चक्र में चन्द्रमा के साथ कोई ग्रह हो तो द्रव्य को देवादि से रक्षित जाने । यदि चन्द्रमा सूर्य से, युक्त हो तो यक्ष से, मङ्गल से युक्त हो तो हनुमान् से, बुध से युक्त हो तो पिशाच से, गुरु से युक्त हो तो कुवेर से, शुक्र से युक्त हो तो प्रेत भूतादि से, शनि से युक्त हो तो म्लेक्ष से, और यदि चन्द्रमा राहु से युक्त हो तो द्रव्य सर्पादिक से रक्षित जाने ॥ २६–३० ॥

बुधा ! तार माया रमा चैव स्वप्ने-
श्वरी चैव डेऽन्तो नवाऽध्याख्य मन्त्रम् ।
व्रती ब्रह्मचारी जपेल्लक्षमेकं
हविष्यान्न भोजी तदाकार्यसिद्धिः ॥ ३१ ॥
लिखेन्मन्त्रमश्वस्थपत्रेऽलि दिव्येऽ-
ष्टगन्धेन दूर्वाङ्कुरेणैव यत्नात् ।
अनेकोपचारेण सम्पूजयेत्तं
प्रयत्नेन धार्यं सुयन्त्रं पवित्रः ॥ ३२ ॥

पहले तार–(ओंकार)फिर मायावीज (ह्रीं) फिर रमावीज (श्रीं) फिर स्वप्नेश्वरी फिर नमः "ॐ ह्रीं श्रीं स्वप्नेश्वर्यै नमः" इस मन्त्र को व्रत करने वाला हविष्यान का भोजन करने वाला

ब्रह्मचारी एक लाख जपे तो कार्य सिद्धि होता है। पवित्र होकर मनुष्य प्रयत्न पूर्वक दिव्य पीपल के पत्र पर अष्टगन्ध की रोशनाई से दूर्वा की लेखनी से यन्त्र लिखे उसको अनेक पूजनीयवस्तु से पूजे फिर उस सुन्दर यन्त्र को धारण करे॥ ३१-३२॥

लिखेद् विन्दु षट् कोण वृत्तं हि पद्मं
दलं चाष्टभिः शोभितं भूमिदेवाः ।
त्रिरेखा युतं भूपुरेणान्वितं यं-
त्र दिव्यं हि सर्वैप्सितं मूर्ध्नि धार्यम् ॥ ३३ ॥

बीच में विन्दु (०) लिखे फिर षट् कोण फिर वृत्त बनाकर अष्टदल कमल बनावे हे भूमि देवों ! तीन रेखा से युत भूपुर भूपुर से संयुक्त करे तो दिव्यरात्रि में शयन करने के समय मन्त्र को धारण कर के शयन करे जो स्वप्नदेखे वह सबेरे कहे। इस प्रकार की क्रियाकर तदनुसार सब द्रव्य को खने इस प्रकार से हीन दुःखप्रद होता है ॥ ३३ ॥

निशायां हि यन्त्रं च धार्यं शयानं
प्रपश्येद्धि स्वप्ने प्रभाते प्रपश्येत् ।
प्रकारेण त्वेवं खनेद् द्रव्य सर्वं
प्रकारेण हीनं सदा दुःखदं स्यात् ॥ ३४ ॥

सुराणां द्विजानां तथाग्नेर्हि स्वप्ने,
भवेद्दर्शनं भूतले यत्र विप्र ।
तथा श्री फलास्वस्थ विष्णु प्रिया च
स्वयं जायते तत्र देवो हि वाच्यः ॥ ३५ ॥

हे विप्र ! यदि स्वप्न में देवता ब्राह्मण अग्नि का दर्शन

हो और जिस भूमि में श्रीफल पीपल तुलसी जामे हो वहां देवता हैं यह कहे ॥ ३४-३५ ॥

यदादृश्यते लक्ष्मणाभूमिभागे ।
तदा तस्य निम्नेधनं भूरि वाच्यम् ।
तथा सुन्दरी दर्शनं चैव स्वप्ने
भवेद्व दर्शनं श्वेतगौवत्सयुक्ता ॥ ३६ ॥
धरास्निग्धवर्णा युताशर्कराभिः
तथा कण्टकैर्भूरुहैश्चैवयुक्ता ।
तथादृश्यते यत्र कीटाण्डकानि
सुदूर्वाङ्कुराढ्यां जलं तत्र भूमौ ॥ ३७ ॥

जिस भूमि में लक्ष्मणा जमी हो और जहाँ पर श्वेत गौ और सुन्दर स्त्री का स्वप्न में दर्शन हो उहाँ पर धन निश्चय है। जहाँ चिकनी मिट्टी हो कङ्कड़ वाली मिट्टी हो तथा कांट पेड़ से युक्तहो जहां क्रिमी अण्डा देख पड़े सुन्दर दूर्वा देख परे तो वहां जलजाने ॥ ३६-३७ ॥

मही यत्र गोमायुभिर्लुण्ठिता वै
प्रपूर्णोऽपि पात्रं हि तैलेन यत्र ।
स्वयं चैव दीपो विनष्टस्तु तत्र
धरायां हि शल्यं मही देव सत्यम् ॥ ३८ ॥

हे मही देव ! जो भूमि गोमायु (गीदड़) से युक्तहो वहां हड्डी जाने, पात्र में तेल पूर्णभर के दीप वार दिया जाय तो स्वयं जहां बुझजाय वहाँ हड्डी निश्चय जाने ॥ ३८ ॥

अभूत् पूज्य सांकृत्यवंशे पवित्रे
द्विजेन्द्रोऽहिविश्वेश्वरो विज्ञवर्य्यः ।
ततो दर्शनज्ञश्च काली प्रसन्नः
किलासीद् बुधो छत्रधारी तु तस्मात ॥ १९ ॥
सुतस्तस्य रामप्रियायाः कृपातः
बुधो श्री महीदेव मातृप्रसादः ।
कृतं तेन भूरत्न खेटेन्दुवर्षे
नभस्येऽवलच्चे हरेर्जन्मतिथ्याम् ॥ ४० ॥

श्रीसाङ्कृत्य महर्षि के पवित्र वंशमें ब्राह्मणों में उत्तमविद्वानों में वर श्री पूज्यपाद विश्वेश्वरपाण्डेयजीहुए । उनके पुत्र समस्त साङ्गवेद दर्शन के ज्ञाता कालीप्रसन्नजी (कालीचरण) जी हुए, उनके पुत्र श्री छत्रधारी (छत्रधर) पाण्डेय जी हुए उनके पुत्र श्री सीताजी के कृपासे पण्डितभूदेवमातृप्रसाद हुए हैं जो सम्वत १९९१ भाद्रपदकृष्ण श्रीकृष्णजन्माष्टमी के दिन हरि के प्रसन्नार्थ इस रत्नगर्भा चक्रको बनाया ॥ ३९–४० ॥

समर्पणम्—

सप्ताङ्ग संख्यं कुसुमं तात ! दिव्यं मनोहरम् ॥
प्रेम्णा समर्पये पाणौ पितुः कैलासवासिनः ॥ १ ॥

इति श्री ज्यौतिषीन्द्र मुकुटमणि छत्रधरसूरि सूनु मिरजापुर मण्डलान्तर्गताही ग्रामस्थ शङ्कर पाठशालाध्यापकाखिल-भारतवर्षिय संस्कार समिति कर्मकाण्डाचार्य मातृप्रसाद पाण्डेय प्रणीत रत्नगर्भाचक्रं तत्कृत सोदाहरण भाषाटीकया सम्भूषितं समाप्तम् ।

प्रकाशित होगया !] सचित्र— [प्रकाशित होगया !!

रसेन्द्रसारसंग्रह—

गूढार्थसन्दीपिकासंस्कृतव्याख्यासहित ।

जगदीश्वर की अनुपम अनुकम्पा से सर्वत्र प्रचलित प्राचीन ग्रन्थ रसेन्द्रसारसंग्रह की विशद तथा सरल संस्कृत टीका विशेष कर विद्यार्थियों के लिये अधिक उपयोगी तैयार हो गई, अर्थात् मैंने—व्याकरण—साहित्य—दर्शनादिक के विद्वान् तथा काशी हिन्दू यूनिवर्सिटी से रसायन भौतिक वनस्पति और जीवशास्त्र एवम् आयुर्वेद और डाक्टरी में परमनिष्णात तथा हिन्दी और संस्कृत की प्रतियोगिताओं में श्री पूजनीय कुलपति पं० श्रीमदनमोहन मालवीयजी सरीखे पूज्यविद्वानों से स्वर्णपदक, रजतपदक आदि प्राप्त आयुर्वेदाचार्य पं० श्री अम्बिकादत्तशास्त्री जी के द्वारा उक्त ग्रन्थ की **गूढार्थ-सन्दीपिका** नामक अत्यन्त सरल संस्कृत में विस्तृत व्याख्या कराकर मुद्रित किया है । उक्त व्याख्या से यह ग्रन्थ आजकल के वैज्ञानिक ढङ्ग का अनुपम हो गया है । केवल इसी एक ग्रन्थ के पास में रखने से सम्पूर्ण रसग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त हो सकता है । रोगों का एवम् पथ्यापथ्य आदि का भी इसमें उल्लेख करा दिया गया है अन्त में ओषधियों के अनेक भाषा आदिकों के नाम तथा अन्यान्य उपयोगी विषयों को देकर इस संस्करण को सर्वोत्तम रसचिकित्सोपयोगी बना दिया गया है जिसे पाठक जन स्वयं देखकर जान लेवेंगे । विशेष लिखना लेख का कलेवर मात्र बढ़ाना है अत एव अन्त मे इतना ही कहना है कि उक्त शास्त्रीजी ने प्राच्य पाश्चात्य चिकित्सा विज्ञान के अन्दर तपश्चर्यापूर्वक घोर परिश्रम करने के पश्चात् समस्त रस शास्त्ररूपी समुद्र का मन्थन करके निकाली हुई रत्नरूपी अपनी टीका से इस ग्रन्थ को अमूल्य सर्वोत्तम बना दिया है ।

प्रचारार्थ मनोहर कपड़े की जील्द का लागतमात्र मूल्य ३) है ।

१ **काकचण्डीश्वरकल्पतन्त्र** । वैद्यक का अत्यन्त प्राचीन ग्रन्थ ॥)
२ **रसाध्याय सटीक** । " " " " ॥=)
३ **निदानदीपिका** । निदान ग्रन्थों में सर्वोत्तम ४)

प्रकाशित हो गया] सचित्र— [प्रकाशित हो गया

रसेन्द्रसारसंग्रह-

'रसचन्द्रिका' भाषा टीका सहित ।

आनन्दकन्द सच्चिदानन्द की असीम कृपा से रसेन्द्रसारसंग्रह सरल हिन्दी टीका के साथ प्रकाशित हो गया। इस ग्रन्थ की प्रसिद्धि के बारे में अधिक कहने की जरूरत नहीं। हिन्दी में इसकी कोई सरल टीका न होने से अल्प संस्कृत जानने वाले तथा विद्यार्थियों को बहुत असुविधा होती थी। इस कष्ट को दूर करने के लिये आयुर्वेद के सुयोग्य विद्वान 'आयुर्वेदाचार्य पण्डित प्रयागदत्त जोषी' जी ने इसकी **रसचन्द्रिका** नामक सरल टीका बनाई है। यह टीका अत्यन्त सरल हिन्दी भाषा में सुविस्तृत हुई है। स्थल विशेष पर टिप्पणियाँ देकर और भी खुलासा कर दिया गया है। मत-मतान्तरों का उल्लेख व तथा सभी सन्दिग्ध स्थलों पर आधुनिक कालके उपयुक्त मात्राएँ भी दी गयी हैं।

इसे एक साधारण अल्पज्ञ बिना गुरु के समझ सकता है। परिशिष्ट में नवीन रोगों पर रसों का प्रयोग, मान परिभाषा, मूषा तथा पुट प्रकरण, अनुपान विधि और औषध बनाने के नियम आदि भी देकर टीकाकार ने इस ग्रन्थ को एक सम्पूर्ण रस ग्रन्थ ही बना दिया है। यंत्रों के भी चित्र वर्णन सहित देकर स्पष्ट कर दिये गये हैं। अधिक क्या कहें एक बार ग्रन्थ को देखते ही आप मुग्ध हो जायंगें। इतना होने पर भी कपड़े की मनोहर जिल्द गुटका संस्करण का मूल्य लागत मात्र २॥

वैद्यक-परिभाषा-प्रदीप

'प्रदीपिका' भाषा टीका सहित ।

शास्त्रों में परिभाषा का मूल्य कितना है, यह कहने की आवश्यकता नहीं; खासकर आयुर्वेद जैसे व्यावहारिक शास्त्रों में तो पद पद इसकी जरूरत होती है। परिभाषा न जानने वाला वैद्य साक्षात् यमराज ही है। आयुर्वेद के तन्त्रों में भी परिभाषा एकत्र नहीं कही गई है जिससे नवीन प्राचीन सब चिकित्सकों को एवं विद्यार्थियों को अत्यन्त कठिनता होती है संस्कृत के एक दो संग्रहग्रन्थ इस विषय में होने पर भी मूल में या संस्कृत व्याख्याओं के साथ होने से नवीन और अल्प संस्कृतज्ञ वैद्यों और विद्यार्थियों के काम के नहीं हैं। इस असुविधा को देख कर आयुर्वेदाचार्य पण्डित प्रयागदत्त जोषी जी ने अत्यन्त सरल हिन्दी में इसकी **प्रदीपिका** नामक टीका छपवाई है। यह विशद व्याख्या हर एक साधारण हिन्दी जानने वाले को भी समझ में आ सकती है, अतः यह सबके काम की हो गई है। सन्देहात्मक स्थलों पर काफी प्रकाश डाला गया है। यह प्रदीप की प्रदीपिका आपको शास्त्र तथा व्यवहार में मार्ग दर्शक होगी। मूल्य केवल ॥=)

1839

SANSKRIT PUSTAKALAYA

प्रकाशित हो गया !] [प्रकाशित होगया !!

श्रीमद्भावमिश्रविरचितः

D2; 864
N39

भावप्रकाशः-पूर्वार्द्धः

विद्योतिनी-भाषा टीका सहितः ।

यह ग्रन्थ यद्यपि अन्यत्र भी प्रकाशित हुआ है तथापि आकार तथा मूल्य की अधिकता साथही अनुवाद के अधूरेपन से गरीब विद्यार्थियों को बहुत कठिनाई पड़ती हुई देख उनकी सुविधा के लिए मैंने इसका सुन्दर विद्योतिनी नामक अत्यन्त सरल तथा विस्तृत हिन्दी अनुवाद करा कर प्रकाशन किया है ।

इसमें और भी सबसे उत्तम विशेषता यह है कि इसके गर्भ-प्रकरण के ऊपर आधुनिक पाश्चात्य आयुर्वेद (डाक्टरी) के अनुसार एक सचित्र परिशिष्ट तथा निघण्टु भाग में प्रत्येक औषधियों के साथ २ एक विशद विवरण भी दिया गया है । जिसके लिये रूपनिघण्टुकार सुप्रसिद्ध श्रद्धेय श्रीरूपलालजी (भूतपूर्व सम्पादक सचित्र वृद्दर्पण) ने अपना अमूल्य समय देकर दर्शनीय लेख प्रकाशित किया है । इसमें प्रत्येक विषयों के यथास्थान नवीन नवीन अवतरण भी प्रकाशित किये गये हैं तथा विशेष २ औषधियों पर चित्र भी दिये गये हैं जिससे 'सोने में सुगन्धि' आ गई है । हमारा दृढ़ विश्वास है कि इस संस्करण का मुक़ाबला दूसरे कोई भी संस्करण नहीं कर सकते । सर्व साधारण की सुविधा के लिए कपड़े की मनोहर पक्की जील्द पूर्वार्द्ध का मूल्य ५) है । उत्तरार्द्ध भी अत्यन्त शीघ्र प्रकाशित होगा ।

भावप्रकाशः-ज्वराधिकारः

विद्योतिनी-भाषा टीका सहितः ।

बिहार मध्यमा परीक्षोपयोगी भावप्रकाश पूर्वार्द्ध के आगे ज्वराधिकार भाग भी नवीन वैज्ञानिक ढंग पर विद्योतिनी नामक भाषा टीका के साथ जनवरी १९३९ में प्रकाशित हो जायगा। विद्योतिनी भाषा टीका छात्रों के लिये संजीवनी बूटी का काम करती है । मेरा दृढ विश्वास है कि बिना अध्यापक की सहायता ही छात्र ग्रन्थ को भली भांति समझ सकेंगे ।

मूल्य बहुत ही अल्प होगा ।

जन्मपत्रदीपकः।

सोदाहरण-सटिप्पण-हिन्दीटीकासहितः।

(लेखक—ज्यौतिषाचार्य पं० श्रीविन्ध्येश्वरीप्रसादद्विवेदी)

इस छोटी सी पुस्तक में जन्मपत्र बनाने की कुल विधियाँ ऐसी सरलता
क नये ढङ्ग से लिखी गई हैं कि साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी इस
द्योपान्त मनन करके अच्छी से अच्छी कुण्डली (जन्मपत्रिका) ब
ता है। सर्व साधारण को गूढ़ विषयों का सुलभता पूर्वक झटि
ज्ञान होजाने के लिये अत्यन्त सरल सुबोध हिन्दीभाषा में टीका और
हरण एवं जगह २ पर आवश्यक टिप्पणी भी कर दी गई हैं
ना में ग्रन्थकार ने गागर में सागर भरने की लोकोक्ति को
डाला है ऐसे उपयोगी ग्रन्थ का मूल्य केवल लागतमात्र

भावप्रकाशः

संपादक तथा टीकाकार—

ालीराजगुरुकुमार पं० श्रीकेशवमिश्रजी कृत "अमृतान
ा दैवज्ञभूषणपण्डितमातृप्रसादजीपाण्डेयकृत "भावबोधि
भाषाटीका प्रश्नपत्र सहित।

जितने विवेकपूर्ण साङ्गोपाङ्ग विषय इस ग्रन्थ में हैं अन्य
ों मिलते। केवल इसी ग्रन्थ को पास में रखने से मनुष्य
तिषी तथा मनुष्यमात्र का आद्यन्तफल यथोचित
भंकता के साथ कहने में समर्थ हो सक्ता है। इस ग्र
र्थी छात्रों के प्रश्नोत्तर के लिए जिन साधनों की
ुटी है वे
भइ।

